केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
Smt. JYOTI KHANNA [illegible] G.H.S. SCHOOL DOLARIYA DIST.-NARMADAPURAM V. No. ....../148	Govt. High School [illegible]

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्नक्रमांक - 1

(I) परिवर्तनशील साधन का

(II) आगम - लागत

(III) क्या उत्पादन किया जाए

(IV) ~~उपर्युक्त सभी~~ (IV) गॉसन के नियम का

(V) क्रमवाचक उपयोगिता पर

(VI) (अ) व स

(VII) स्थिर हो जाती है

B S E

प्रश्नक्रमांक - 2

(i) (ब)

(ii) स्वीकारक

(iii) घटती

(iv) कीमत

(v) साम्य

(vi) औसत लागत

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 3

'अ'		'ब'
i) भारतीय अर्थव्यवस्था	-	(vi) मिश्रित अर्थव्यवस्था
ii) साधन की माँग	-	(i) व्युत्पन्न माँग
iii) N.N.P.	-	vii) शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
iv) उत्पादक द्वारा यंत्रों का उपयोग	-	iv) अंतिम वस्तुएं
v) बढ़ई द्वारा लकड़ी का उपयोग	-	(v) मध्यवर्ती वस्तुऐं
vi) बचत	-	vii) रिसाव

प्रश्नक्रमांक - 4

i) असत्य
ii) सत्य
iii) सत्य
iv) असत्य
v) सत्य
vi) असत्य
vii) सत्य

योग पूर्व पृष्ठ

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 5

i) भुगतान संतुलन में वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी, ऋण संबंधी समस्त आर्थिक अंतर्राष्ट्रीय सौदे जो दूसरे देशों के साथ किए जाते हैं।

ii) बचत और आय के मध्य क्रियात्मक संबंध बचत फलन कहलाता है।

iii) औसत उपभोग प्रवृत्ति और औसत बचत प्रवृत्ति का योग एक होता है। (APC + APS = 1)

iv) प्रत्यक्ष कर का भार कर चुकाने वाले व्यक्ति पर पड़ता है, (आयकर, निगम कर)

(v) राजस्व व्यय — राजस्व प्राप्तियाँ = राजस्व घाटा

vi) प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा - ब्याज

99.1mm x 33.9mm x 16

16 A4

5

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 6

उपभोग वस्तु :- वे वस्तुएँ जिनका विनिमय उत्पादक से अंतिम उपभोक्ता को किया जाता है, विक्रय होने के पश्चात ये सक्रिय आर्थिक प्रवाह से बाहर हो जाती हैं।

- जिनका उपभोक्ता अपनी आवश्यकता की संतुष्टि के लिए प्रत्यक्ष रूप में प्रयोग करता है, इन्हें कोई आर्थिक लाभ के उद्देश्य से क्रय नहीं किया जाता।
- ये टिकाऊ, गैर-टिकाऊ वस्तुओं में विभाजित रहती हैं।

जैसे - टी.वी., खाद्य सामग्री, दूध, फल-सब्जी आदि।

प्रश्नक्रमांक - 7

मुद्रा की माँग (Demand of Money) :- मुद्रा की वह माँग जो निश्चित समय में देश की जनता द्वारा माँगी जाती है, मुद्रा की माँग कहलाती है। निश्चित समय पर यह एक स्टॉक अवधारणा है।

- कीन्स ने इसे तरलता-पसन्दगी से संबंधित किया है, लोग मुद्रा तरल रूप में रखना चाहते हैं, इसे ही मुद्रा की माँग कहते हैं।

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ

प्रश्न क्र.

मुद्रा की माँग मुख्यत: संव्यवहार करने, सट्टा उद्देश्य एवं सावधानी उद्देश्य आदि उद्देश्यों से की जाती है,
मुद्रा की माँग ब्याज की बाजार दर, सौदो की मात्रा से भी संबंधित होती है,

प्रश्नक्रमांक - 8

सट्टा उद्देश्य :-

मुद्रा की माँग के संदर्भ में सट्टा उद्देश्य से आशय ब्याज की दर की भविष्य मे वृद्धि या कमी की आशा अथवा अनुमान में मुद्रा की तरल रूप मे की जाने वाली माँग से है,
सट्टा उद्देश्य में मुद्रा की माँग एवं ब्याज की दर मे विपरीत संबंध होता है,

सट्टा उद्देश्य हेतु मुद्रा की माँग = $\frac{r_{max} - r}{r - r_{min}}$

[r = ब्याज की बाजार दर
r_{max} = अधिकतम ब्याज दर
r_{min} = न्यूनतम ब्याज दर]

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 9

समग्र माँग (Aggregate demand) एक निश्चित समय के लिए देश के निवासियों द्वारा उपभोग एवं विनियोग पर किए गए व्यय के योग को समग्र माँग कहते हैं। समग्र माँग प्रत्याशित होती है, अर्थात् जब उद्यमी एक निश्चित रोजगार स्तर पर उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की बिक्री से जिस राशि के प्राप्त होने की आशा करते हैं, वह समग्र माँग ही कहलाती है।

समग्र माग के घटक -

$$AD = C + cY + I + G + (X - M)$$

(यदि अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार पर रोक नहीं है तो,

C = स्वायत्त उपभोग व्यय (निजी लोगों)

cY = प्रेरित उपभोग व्यय (c = MPC)

I = स्वायत्त निवेश व्यय

G = सरकारी उपभोग व्यय

(X-M) = शुद्ध निर्यात

समग्र माँग में 2 मुख्य तत्व - उपभोग व्यय एवं विनियोग व्यय होते हैं।

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 10

सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) - आय मे होने वाले परिवर्तन से बचत मे जो परिवर्तन होता है, उसको सीमांत बचत प्रवृत्ति द्वारा व्यक्त किया जाता है, अर्थात आय मे अतिरिक्त वृद्धि से बचत में किस दर से वृद्धि होगी यह सीमान्त बचत प्रवृत्ति बताती है।

$$MPS = \frac{\Delta S}{\Delta Y} \quad \frac{\text{- बचत मे परिवर्तन}}{\text{- आय मे परिवर्तन}}$$

चूंकि $S = Y - C$ तो $\frac{\Delta Y - \Delta C}{\Delta Y} = \frac{\Delta Y}{\Delta Y} - \frac{\Delta C}{\Delta Y}$

$MPS = 1 - MPC$

BSE
ST-16 A4

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्नक्रमांक - 11

सरकारी बजट (Governmen Budget) - सरकार के एक वर्ष के समस्त सार्वजनिक व्यय एवं सार्वजनिक आय का नियोजित ब्यौरा पत्र सरकारी बजट कहलाता है।

- इसमें एक वर्ष के लिए सरकार किन-किन स्त्रोतों से कितनी मात्रा में राशि प्राप्त करेगी तथा किन-किन स्त्रोतों पर राशि व्यय करेगी, यह समस्त ~~अ~~ जानकारी उस बजट में दी रहती है।
- सरकारी बजट देश के वित्तमंत्री द्वारा तैयार किया जाता है एवं संसद में प्रस्तुत किया जाता है।
- यह बजट एक ~~वार्षिक~~ वित्तीय वर्ष (भारत में 1 अप्रैल - 31 मार्च) के लिए बनाया जाता है।

प्रश्नक्रमांक - 12

मांग (Demand) - "किसी वस्तु के दिए हुए मूल्य पर निश्चित समय में उसकी जो मात्रा मांगी जाती है, उसे मांग कहते हैं। मांग के लिए कुछ तत्वों का होना

www.oddyindia.com
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

आवश्यक है, जो –
i) प्रभावपूर्ण इच्छा ii) व्यय करने योग्य साधन, iii) साधनों के व्यय करने की तत्परता iv) निश्चित समय एवं v) निश्चित कीमत ।

उदाहरण के लिए – टी.वी. की ₹ 10,000 के लिए आज लोगों ने 30 इकाइयों को खरीदा ।
[यहाँ :- समय – आज, कीमत – ₹10,000
मात्रा – 30 इकाई]

प्रश्नक्रमांक – 13

(उत्पत्ति) उत्पादन के मुख्यतः पाँच साधन होते हैं –

उत्पादन के साधन
- भूमि (लगान)
- पूँजी (ब्याज)
- श्रम (मजदूरी)
- [illegible] (वेतन)
- उद्यमी (साहसी) (लाभ)

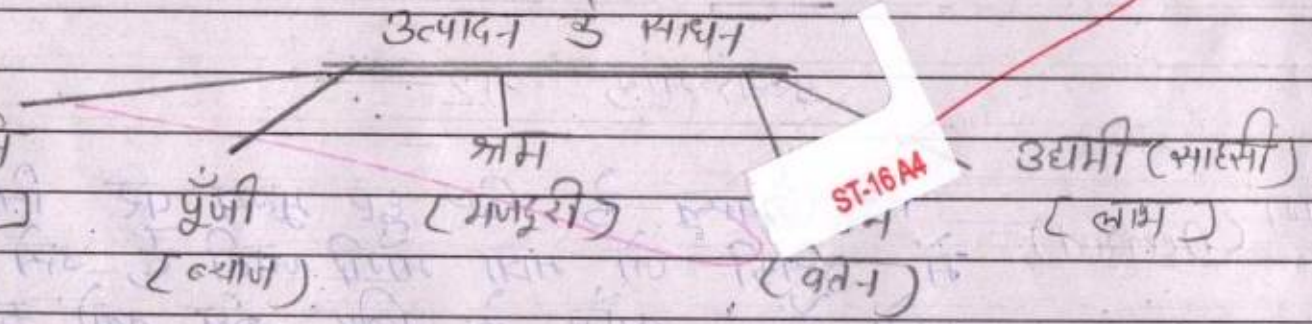

ST-16 A4

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 14

संप्राप्ति (Revenue) - जब फर्म द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की बिक्री द्वारा जो कुल मौद्रिक राशि प्राप्त होती है, उसे संप्राप्ति या आगम कहते हैं,

- संप्राप्ति को बेची गई इकाइयों एवं प्रति इकाई कीमत से गुणा करने पर प्राप्त किया जा सकता है,
- उत्पादक के लिए संप्राप्ति को अधिकतम करने का लक्ष्य रहता है, क्योंकि इसी के द्वारा वह सभी उत्पादन के साधनों को भुगतान करता है, एवं अपना लाभ प्राप्त करता है

कुल संप्राप्ति = बेची गई वस्तु की मात्रा x वस्तु की प्रति इकाई कीमत

प्रश्नक्रमांक - 15

समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics) अर्थशास्त्र की जिस शाखा में एक देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन सामूहिक रूप में किया जाता है, समष्टि अर्थशास्त्र

EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

कहते है, इसके अंतर्गत समग्र माँग, समग्र पूर्ति, राष्ट्रीय आय, सामान्य कीमत स्तर, मौद्रिक नीति, राजकोषीय नीति आदि विषय पर अध्ययन किया जाता है,

प्रो. शूल्ज - "समष्टि अर्थशास्त्र का मूल्य एवं राष्ट्रीय आय विश्लेषण है,"

योगात्मक अर्थशास्त्र, व्यापक अर्थशास्त्र, राष्ट्रीय आय एवं रोजगार सिद्धान्त, राष्ट्रीय आय विश्लेषण आदि नाम से भी जाना जाता है, इसमें व्यक्तिगत इकाइयों का नहीं बल्कि इकाइयों के समूह का अध्ययन किया जाता है,

B S E

प्रश्नक्रमांक - 16

खुली अर्थव्यवस्था स्वायत्त खर्च गुणक बंद अर्थव्यवस्था की तुलना में छोटा होता है, क्योंकि -

i) खुली अर्थव्यवस्था में आयातों द्वारा आय का रिसाव चक्रीय प्रवाह से विदेशों की ओर हो जाता है,
ii) यदि आयात > निर्यात तो घरेलू वस्तुओं की समग्र माँग कम हो जाएगी,

51 + 3 = 54

प्रश्न क्र.

iii) मुख्य कारण स्वायत्त व्यय गुणक सीमांत उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करता है, खुली अर्थव्यवस्था में MPC में सीमांत आयात प्रवृत्ति भी जुड़ जाती है, इससे गुणक का प्रभाव कम हो जाता है।

बंद अर्थव्यवस्था का स्वायत्त व्यय गुणक = $\frac{1}{1-c}$ (C = MPC)

खुली अर्थव्यवस्था का गुणक = $\frac{1}{1-c+m}$ [C = MPC, m = आयात की सीमान्त प्रवृत्ति]

उदाहरण =

MPC = 0.8

m = 0.2

बन्द अर्थव्यवस्था का गुणक = $\frac{1}{1-0.8} = \frac{1}{0.2} = 5$

खुली अर्थव्यवस्था का गुणक = $\frac{1}{1-0.8+0.2} = \frac{1}{0.2+0.2} = \frac{1}{0.4} = 2.5$

यहाँ पर 5 > 2.5

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 17

सकारात्मक आर्थिक विश्लेषण :-

सकारात्मक आर्थिक विश्लेषण में निम्न लक्षण होते हैं -

i) कारण - परिणाम से संबंध,
ii) केवल 'क्या' है है, से संबंध 'क्या होना चाहिए' से कोई संबंध नहीं होता,
iii) यह एक स्थैतिक अर्थशास्त्र है अर्थात स्थिति का अध्ययन करता है, नीतिगत अर्थशास्त्र नहीं है,
iv) इसका नीतिगत सिद्धान्तों से कोई संबंध नहीं होता,

वास्तविक अथवा सकारात्मक अर्थशास्त्र के अर्थशास्त्री रॉबिन्स समर्थक थे। अर्थशास्त्र चूँकि एक विज्ञान है इसलिए इसका संबंध वास्तविकता से होना चाहिए। (रॉबिन्स के अनुसार)

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 19

'मितव्ययता का विरोधाभास' :- यह अवधारणा इस तथ्य पर आधारित है कि बचत व्यक्तिगत रूप से एक गुण है, परन्तु सामूहिक रूप से बचत एक अभिशाप सिद्ध होती है,

- 'मितव्ययता के विरोधाभास' से तात्पर्य ~~जब~~ जब देश के समस्त लोग बचत में वृद्धि करते हैं तो वे पूर्ववत ही बचत कर रहे होते हैं या कम बचत परन्तु बचत में वृद्धि नहीं होती, इसका कारण यह है कि जब—

बचत बढ़ती है → उपभोग कम होता है → ~~माँग~~ समग्र माँग कम हो जाती है → अधिपूर्ति से स्टॉक में वृद्धि → उत्पादन में कमी → रोजगार में कमी → आय में कमी → बचत में कमी / या पूर्ववत हो जाती है,

अर्थात बचत में वृद्धि से देश के दूसरे पक्षों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा जिससे आय में कमी होने से बचत या तो पहले के समान हो जाएगी नहीं तो और कम हो जाएगी,

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 18

फर्मों की एक स्थिर संख्या के होने पर पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में कीमत का निर्धारण बाजार की माँग एवं पूर्ति शक्तियों द्वारा होता है,

बाजार संतुलन :- बाजार संतुलन से आशय ऐसी स्थिति से है जहाँ माँग एवं पूर्ति शक्तियाँ बराबर रहती है एवं बाजार को साफ कर देती है,

- बाजार संतुलन में उत्पादक को अधिकतम लाभ प्राप्त होता है तथा उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है,
- संतुलन की स्थिति से तात्पर्य है जहाँ परिवर्तन न किया जाए, साम्य की स्थिति में उत्पादक अपना उत्पादन करके अधिकतम लाभ कमाते हैं,

संतुलित बाजार में संतुलित कीमत एवं संतुलित मात्रा उस स्थान पर निर्धारित होती है जहाँ उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों के उद्देश्य संगत हो जाते हैं,

B
S
E

प्रश्न क्र.

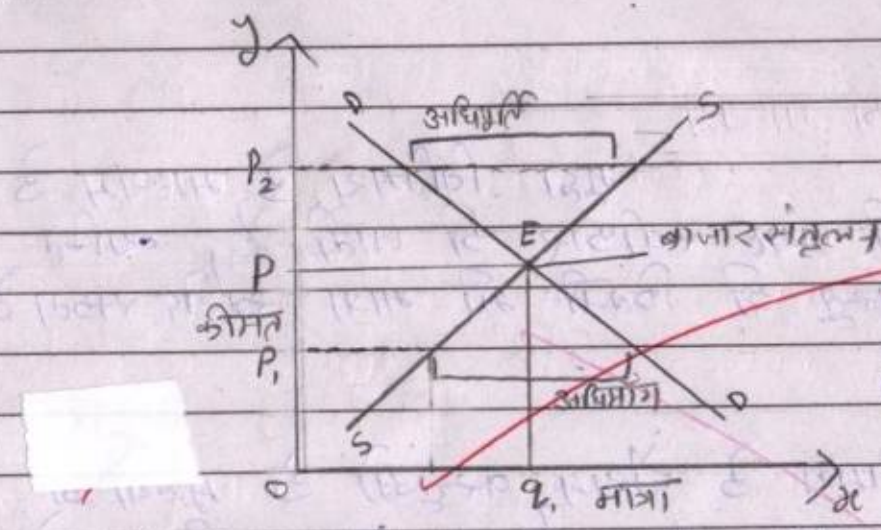

बाजार संतुलन की स्थिति रेखाचित्र द्वारा बताई गई है, जहाँ E बिन्दु पर बाजार संतुलन की स्थिति मे है। OQ_1 संतुलित मात्रा एवं OP संतुलित कीमत OP_1 कीमत पर अधिमाँग है तथा OP_2 कीमत पर अधिपूर्ति अतः यह कीमत बाजार संतुलन मे नही है।

B
S
E

प्रश्नक्रमांक - 20

मुद्रा के कार्य

- **प्राथमिक कार्य**
  - विनिमय का माध्यम
  - मूल्य का मापन
- **गौण कार्य**
  - मूल्य का संचय
  - मूल्य का हस्तांतरण
  - स्थगित भुगतान सौदे

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्राथमिक कार्य –

i) विनिमय का माध्यम –

मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्यतः सभी जगह स्वीकार की जाती है, व्यक्ति मुद्रा द्वारा किसी भी वस्तु की कितनी भी मात्रा खरीद सकता है।

ii) मूल्य का मापन –

विनिमय के दौरान वस्तुओं के मूल्यों को मुद्रा रूपी मापदण्ड से मापा जाता है, लगभग सभी वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य के रूप में मापा जा सकता है।

B
S
E

गौण कार्य – i) मूल्य का संचय –

मुद्रा की अन्य परिसंपत्तियों की तुलना में संचय लागत कम होती है, यह सबसे तरल परिसंपत्ति है जिसके द्वारा धन का बहुत आसानी से संचय किया जा सकता है, यह शीघ्र नष्ट नहीं होती और इसके मूल्य में भी स्थिरता लगभग बनी रहती है।

ii) मूल्य का हस्तांतरण – व्यक्ति अपनी परिसंपत्ति, वस्तुओं को मुद्रा के बदले बेचकर उस मूल्य को

प्रश्न क्र.

प्राप्त कर सकता है जिसे वह कहीं भी हस्तांतरित कर सकता है, जबकि भारी वस्तुओं (भूमि) के संदर्भ में उसे एक स्थान से दूसरे स्थान नहीं ले जाया सकता।

(V) स्थगित सौदों का भुगतान - मुद्रा द्वारा भविष्य में किए गए भुगतानों के लिए आज वर्तमान में सौदे करना संभव हुआ है, उधार द्वारा व्यक्ति उस राशि का मूल्य के रूप में ~~भवि~~ भविष्य में भुगतान सकता है।

प्रश्नक्रमांक - 21

$$\text{माँग की कीमत लोच } e_d = \frac{\text{माँग की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

या $$e_d = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

यहाँ - ΔQ = मात्रा में परिवर्तन

ΔP = कीमत में परिवर्तन

P = पुरानी कीमत

Q - पुरानी माँग की मात्रा

कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

वस्तु की कीमत $P_1 =$ ₹ 4 $\Delta P = P_2 - P_1$ (5-4)
परिवर्तित कीमत $P_2 =$ ₹ 5 $\Delta P =$ ₹ 1

वस्तु की पुरानी माँग $Q_1 = 25$ इकाई $\Delta Q = Q_2 - Q_1$ (20-25)
वस्तु की नई माँग $Q_2 = 20$ इकाई $\Delta Q = -5$ (इकाई कमी).

माँग की कीमत लोच $ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$

$$ed = \frac{-5}{1} \times \frac{4}{25} = \frac{-4}{5}$$

$$ed = -0.8$$

[- चिन्ह का मतलब वस्तु की माँग एवं उसकी कीमत में विपरीत संबंध होता है।]

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्नक्रमांक - 22

फर्म का उत्पादन फलन = $Q = 5L^{\frac{1}{2}} . K^{\frac{1}{2}}$

[उत्पादन फलन :- एक निश्चित तकनीक स्तर के अंतर्गत उत्पादित निर्गत एवं उत्पादन में प्रयुक्त आगतों के मध्य फलनात्मक संबंध को उत्पादन फलन कहते हैं।]

उपर्युक्त उत्पादन फलन में, L = श्रम इकाई, K = पूँजी इकाई
Q = निर्गत

L = 100 इकाई एवं K = 100 इकाई

अधिकतम संभावित निर्गत $Q = 5L^{\frac{1}{2}} . K^{\frac{1}{2}}$

$Q = 5 \times \sqrt[2]{100} \times \sqrt[2]{100}$

$Q = 5 \times 10 \times 10$

$Q = 500$

अतः अधिकतम संभावित निर्गत 500 इकाइयों का होगा।

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 23

पूर्ति :- पूर्ति से तात्पर्य एक फर्म द्वारा किसी निश्चित समय में निश्चित कीमत पर वस्तुओं की की गई बिक्री को एक फर्म की पूर्ति कहते है।

किसी फर्म की पूर्ति वक्र उस फर्म द्वारा बेचने योग्य उन वस्तुओं की मात्रा एवं विभिन्न कीमत स्तरों को दर्शाता है। इसे प्रभावित करने वाले निम्न तत्व हैं -

B S E

i) वस्तु की कीमत :- पूर्ति के लिए उस वस्तु की कीमत बहुत महत्व रखती है, उत्पादक अथवा फर्म अधिक कीमत पर पूर्ति अधिक तथा कम कीमत पर पूर्ति कम कर देते हैं। इसका आधार पूर्ति का नियम है जो वस्तु की कीमत एवं उसकी पूर्ति में सीधा संबंध स्थ बताता है।

ii) उत्पादन साधनों की कीमत - यदि उत्पादन के साधनों की कीमत में वृद्धि हो जाती है तो उत्पादन की लागते बढ़ जाती है, अतः उत्पादक अपनी पूर्ति कम कर देगा एवं साधनो की कीमत में

BSE

प्रश्न क्र.

कमी होने पर उसकी लागत घट जाएगी जिससे वह अधिक पूर्ति कर सकेगा।

iii) तकनीकी स्तर :-

उत्पादन में तकनीकी स्तर बहुत महत्वपूर्ण होता है, यह यदि कुशल एवं श्रेष्ठ है तो कम लागत पर भी अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सकता है, अच्छी तकनीक अपनाने से उत्पादक द्वारा पूर्ति में वृद्धि हो जाती है एवं इसके विपरीत पुरानी मशीनों, परम्परागत उपकरणों के प्रयोग से कम पूर्ति हो पाती है।

iv) भविष्य में कीमत परिवर्तन की आशा -

यदि उत्पादक को वस्तु की कीमत के संदर्भ में भविष्य में कीमत बढ़ने की संभावना लगती है तो वह अपनी पूर्ति कम कर लेगा एवं भविष्य में वस्तु को ज्यादा अधिक कीमत पर बेचने के लिए स्टॉक में संरक्षित कर लेगा, भविष्य में कीमत घटने की आशा से वह अपनी पूर्ति बढ़ा देगा।

इनके अलावा स्थापन्न वस्तुओं की कीमत, समय तत्व, पूर्ति परिवर्तन की संभावना, वस्तु की प्रकृति आदि का भी पूर्ति वक्र पर प्रभाव पड़ता है।